शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३६ : नई दिल्ली : ९-१५ दिसम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी बाड़मेर के परिपार्श्व में विचरण कर रहे हैं। पूज्यप्रवर २७ दिसम्बर को बाड़मेर सिटी पधार जाएंगे। यहां छह दिन प्रवास करेंगे। नव वर्ष की पूर्व संन्ध्या पर यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। आचार्यप्रवर आगामी १८-३१ जनवरी तक असाडा विराजेंगे। यहां वर्धमान महोत्सव का आयोजन है। १ फरवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु टापरा पधार जाने की संभावना है। असाढ़ा, टापरा आदि बालोतरा के ही पार्श्ववर्ती क्षेत्र हैं। बालोतरा जोधपुर से रेल और सड़क मार्ग से सीधे जुड़ा हुआ है।

जिज्ञासा आपकी : समाधान पूज्यप्रवर का-१

(परम पावन आचार्यप्रवर ने महान अनुग्रह कर विज्ञप्ति के पाठकों की जिज्ञासाओं को समाहित करने की स्वीकृति प्रदान की। उस आधार पर कुछ दिनों पूर्व हमने विज्ञप्ति के माध्यम से धार्मिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं संघीय परिप्रेक्ष्य में लोगों की जिज्ञासाएं आमंत्रित की थीं। पत्रों के माध्यम से हमें बड़ी संख्या में लोगों की जिज्ञासाएं प्राप्त हुईं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अत्यन्त कृपा कर उनमें से सारभूत जिज्ञासाओं के समाधान प्रदान किए। यहां प्रस्तुत है प्रश्नोत्तरों की प्रथम किश्त)

प्रश्न :-कहा जाता है कि सत्य पर अडिग रहना चाहिए। लेकिन देखा यह जाता है कि असत्य का सहारा लेने वाला, छलना का सहारा लेने वाला आगे बढ़ जाता है और सत्य का आश्रय लेने वाला पीछे रह जाता है। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए?

उत्तर :-अध्यात्म की दृष्टि से और अगली गति की दृष्टि से हम विचार करें तो जैसी अवधारणा है कि यहां जो झूठ बोलता है, बेईमानी करता है, वह प्रगति करता है या आगे बढ़ता है, यह अवधारणा ठीक नहीं है। मान लो कुछ पैसा मिल गया, कुछ सुविधा मिल गई तो यहां भले ही बच जाओ, पर आगे माफ होने वाला नहीं है। एक-एक पाई का हिसाब होगा। कृत कर्म भुगतने ही पड़ेंगे। आत्मा की दृष्टि से विचार करें तो यहां तात्कालिक लाभ मिले अथवा न मिले, आत्मकल्याण की दृष्टि से व्यक्ति को सचाई के रास्ते पर चलना चाहिए।

दूसरी बात--यहां भी देखिए कि सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले बहुत आगे बढ़ सकते हैं। आप महात्मा गांधी के जीवन को देखें, वे धनपति थे या नहीं, पर आज महात्मा गांधी के प्रति लोगों में जितनी भावना है, जितना सम्मान है, उनकी तुलना में किसी करोड़पति का नाम है क्या? ऐसा लगता है कि उनकी साधना और सेवा भावना के कारण उनका प्रभाव है।

तीसरी बात--व्यापार की दृष्टि से भी कई बार ऐसा लगता है जो सचाई के रास्ते पर चलता है, दीर्घकाल में उसे लाभ मिलता है। लोगों में उसके प्रति विश्वास जम जाता है कि यह बहुत सच्चा और ईमानदार है। हमें माल इसी आदमी से खरीदना चाहिए। बेईमान आदमी कभी पकड़ में भी आ सकता है। उसे अपने किए की सजा मिल सकती है। इसलिए कुल मिलाकर आदमी को सचाई के रास्ते पर चलना चाहिए और सबसे मूल बात यह है कि आत्मकल्याण की दृष्टि से सचाई की साधना करनी चाहिए।

प्रश्न :- जिस समय हम माला फेरने बैठते हैं, उस समय बुरे विचार क्यों आते हैं? ऐसी स्थिति में क्या माला नहीं फेरना ज्यादा अच्छा नहीं है?

उत्तर :- माला तो फेरना ही फेरना चाहिए। बुरे विचार आएं तो उन्हें ठीक करने के लिए ज्यादा माला फेरनी चाहिए। कई बार हम दूसरे विचारों में लगे रहते हैं, दूसरे कामों में लगे रहते हैं, तब हमें हमारे भीतर क्या हो रहा है, उसका भान भी नहीं रहता। जब हम उन कार्यों से निवृत्त होकर बैठते हैं, तब ये विचार आते हैं और वे हमें ज्ञात भी हो जाते हैं। लेकिन निवृत्त होने पर भी विचार आते हैं तो उन विचारों को देख लेना चाहिए और यह अनुभव करना चाहिए कि ये विचार मेरे नहीं हैं, मैं इनसे अलग हूं और ये विचार मुझसे अलग हैं। ये विचार समाप्त हो जाएं, इस भावना से और ज्यादा जप करने का और मन को जप में लगाने का प्रयास करना चाहिए। श्वास के साथ मंत्र को जोड़कर भी जप किया जा सकता है। परन्तु गंदे विचार आने के भय से माला आदि छोड़ने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए।'

क्रमशः

पाठक ध्यान दें

विज्ञप्ति पाठकवर्ग द्वारा प्रेषित जिज्ञासाओं का परमपूज्य आचार्यप्रवर द्वारा समाधान का क्रम प्रारंभ हो चुका है। पाठक अपनी विविध विषयक जिज्ञासाएं campoffice13@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं। चयनित जिज्ञासाएं ही आचार्यवर द्वारा प्रदत्त समाधान के साथ यथासमय विज्ञप्ति में प्रकाशित की जा सकेंगी। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं--

- जिज्ञासा संक्षिप्त, सारपूर्ण और स्पष्टतया लिखित हो।
- पत्र पर 'जिज्ञासा' शीर्षक अवश्य लिखें।
- जिज्ञासा अपने नाम और संपर्क सूत्र के साथ ही प्रेषित करें। अन्य कोई बात पत्र में न लिखें।
- जिज्ञासा प्रेषित करने के पश्चात उत्तर प्राप्ति हेतु फोन, पत्र व्यवहार आदि न करें।

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

२८ नवम्बर, कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा। जसोल के ऐतिहासिक, प्रभावक और सफल चतुर्मास का अन्तिम दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः जसोल के सुप्रसिद्ध राणी भटियाणी मन्दिर में पधारे। मन्दिर से संबद्ध व्यवस्थापकों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने मन्दिर में मंगलपाठ का उच्चारण किया।

आज ओसवाल भवन (नया) के पार्श्ववर्ती मार्ग को ग्राम पंचायत समिति जसोल द्वारा **'महाश्रमण मार्ग'** के रूप में लोकार्पित किया गया। लोकार्पण से पूर्व ग्राम पंचायत की ओर से श्री पूंजाराम बारेसा आदि ने आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया।

वीतराग समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने राजा प्रदेशी और केशी स्वामी के संवाद का रोचक और मार्मिक विश्लेषण कर जसोलवासियों को आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने आज अनेक श्रावक-श्राविकाओं को विभिन्न संबोधनों से संबोधित किया। उनके नाम पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुके हैं। पूज्यप्रवर ने गत २३ नवम्बर को रानी निवासी **स्वर्गीय जुगराजजी बम्बोली को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'** एवं **श्रीमती शान्तिदेवी सेमलानी** तथा गुड़ारामसिंह निवासिनी **स्व.बिदामबाई गादिया** को **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया है।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त करते हुए जसोल को समय-समय पर पावन करते रहने की प्रार्थना की।

कालांवाली से समागत सुश्री प्रतिभा सिंगला तथा बरपेटा से समागत मुनि विवेककुमारजी और साध्वी

हिमांशुप्रभाजी की संसारपक्षीया भगिनी सुश्री विशाखा बोथरा ने पूज्यवर से मंगलपाठ श्रवण कर आज पारमार्थिक शिक्षण संस्था में उपासिका के रूप में प्रवेश किया।

आज मध्याह्न में जोधपुर के आयकर आयुक्त श्री सुभाषचन्द्रा, उपायुक्त श्री महेशकुमार तथा श्री जी. आर.कोकनी ने पूज्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। रात्रि में मंगलभावना समारोह का अवशिष्ट उपक्रम रहा। कार्यक्रम में तेरापंथ कन्यामंडल, युवती मंडल और तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री शान्तिलाल भंसाली, कोर्डिनेटर डॉ. केवलचन्द सालेचा, ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री शंकरलाल ढेलड़िया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली, मंत्री श्री संपत चौपड़ा, तेयुप अध्यक्ष श्री रमेश भंसाली, श्री प्रवीण भंसाली, किशोर मंडल के संयोजक मुदित ढेलड़िया, सहसंयोजक लालचन्द संकलेचा, कन्यामंडल की सहसंयोजिका सुश्री रीना चौपड़ा, अणुव्रत समिति की ओर से श्री भूपत कोठारी, सुमन सालेचा, श्रीमती लीला सालेचा, श्रीमती पुष्पा बुरड़, श्री दीपचन्द ढेलड़िया, श्री कान्तिलाल ढेलड़िया, डॉ. विष्णु अग्रवाल, श्री डूंगरचन्द सालेचा, श्री खीमराज 'प्रदीप', श्री गौतम एम. भंसाली, श्री मोतीलाल जीरावला, श्री धनपत संकलेचा, बालिका मुस्कान तातेड़, मुस्कान सालेचा, मिताली बागमार आदि ने अपने आराध्य के चरणों में मंगलभाव अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन श्री गणपत भंसाली ने किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की ओर से वर्ष २०११ का अणुव्रत लेखक पुरस्कार श्री ललित गर्ग (दिल्ली) को देने की घोषण की गई।

जसोल से मंगल वेला में मंगल प्रस्थान

२६ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ऐतिहासिक और सफल चतुर्मास की परिसंपन्नता के उपरान्त आज जसोल से मंगल प्रस्थान किया। इससे पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी साध्वीवृन्द के साथ वीतराग समवसरण में विराजमान आचार्यप्रवर के उपपात में उपस्थित हुईं तथा पूज्यवर को विधिवत वंदन करते हुए चातुर्मासिक क्षमायाचना की। पूज्यप्रवर ने साध्वीवृन्द से खमतखामणा किया। साधु-साध्वियों ने भी परस्पर खमतखामणा किए।

प्रातः लगभग ७.२० बजे हजारों-हजारों लोगों की श्रद्धासिक्त भावनाओं को स्वीकार करते हुए आराध्य का स्मरण कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन से मंगल प्रस्थान किया। बुलंद जयनादों और मंगल घोषों के द्वारा लोग अपने हृदय सम्राट के प्रति कृतज्ञ भावों के साथ मंगल भाव अर्पित कर रहे थे। नयनों से ढुलकने वाले अश्रु भक्तों के भीतर उत्पन्न विदाई की व्यथा को अभिव्यक्त कर रहे थे। किन्तु पूज्यचरणों और भावुक भक्तों के नयनों से होने वाली अश्रुवृष्टि--दोनों को रोकना कठिन प्रतीत हो रहा था। जसोल और नाकोड़ा के बीच श्वेतवाहिनी और उनका अनुगमन करता हुआ हजारों लोगों का काफिला अलौकिक दृश्य उपस्थित कर रहा था। 'भूलना भूलों को : याद रखना हमें', 'उऋण हुए गुरुवर : ऋणी बना जसोल' आदि घोषों से सज्जित बैनर जसोलवासियों के आन्तरिक भावों को प्रस्तुति देने वाले थे।

लगभग आठ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर नाकोड़ा पधारे। श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मंडल के पदाधिकारियों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यवर ने मन्दिर परिसर में भगवान पार्श्व की स्तुति करते हुए मंगलपाठ का उच्चारण किया। आचार्यप्रवर का प्रवास शान्ति भवन में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में श्रीमती सुप्रिया मुरड़िया ने गीत का संगान किया। नाकोड़ा ट्रस्ट मंडल के कोषाध्यक्ष श्री गणपतजी पटवारी द्वारा भावाभिव्यक्ति के पश्चात ट्रस्ट मंडल के सलाहकार श्री मुकनचन्द मेहता ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में वीतराग और अवीतराग आत्माएं अनंत हैं। राग-द्वेष को जीतना परम साधना होती है। साधक चिंतन करे कि मैं कषायमुक्ति की

दिशा में आगे बढ़ रहा हूं या नहीं? मेरे कषाय तीव्र हैं, मध्यम हैं अथवा मंद अवस्था में हैं? पंचम अर में पूर्ण वीतराग कोई नहीं बन सकता, किन्तु उस दिशा में आगे अवश्य बढ़ा जा सकता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'भगवान पार्श्वनाथ वीतराग पुरुष थे, इसलिए वे प्रणम्य हैं। उनकी स्तुति-आराधना आदि के द्वारा हम भी वीतरागता की दिशा में प्रस्थित हो सकते हैं। निष्काम भाव से की जाने वाली उपासना ज्यादा महत्त्वपूर्ण होती है। भौतिक कामना उपासना के महत्त्व को कम कर देती है। वीतराग की भक्ति करना भी अच्छा है। उसके साथ वीतरागता की साधना और ज्यादा श्रेयस्कर होती है। प्रेक्षाध्यान प्रविधि में हर परिस्थिति को ज्ञाता-द्रष्टा भाव से देखने का निर्देश प्राप्त होता है। ज्ञाता-द्रष्टा भाव के अभ्यास के द्वारा शुद्धात्मा को प्राप्त किया जा सकता है।'

पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात पारमर्थिक शिक्षण संस्था में इस वर्ष प्रवेश लेने वाली उपसिकाओं ने गीत के माध्यम से पांच माह तक उपासना का अवसर प्रदान करने हेतु आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए भविष्य में भी ऐसा अवसर प्रदान करने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उन्हें असाडा प्रवास के दौरान उपासना करने की स्वीकृति प्रदान की। नाकोड़ा ट्रस्ट मंडल के ट्रस्टी श्री उदयराज जैन ने आभार ज्ञापित किया। ट्रस्टी श्री वीरचन्द वडेरा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

महत्त्वपूर्ण निधि है संवर की साधना

३० नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः नाकोड़ा से जसोल की ओर प्रस्थान किया। नाकोड़ा ट्रस्ट द्वारा संचालित ज्ञानशाला भवन में विहार के दौरान आचार्यवर का पदार्पण हुआ। ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर के अपनी विधि के अनुसार वंदन किया। प्रशिक्षक श्री नरेन्द्र कोटड़िया ने ज्ञानशाला के विषय में अवगति दी। आचार्यप्रवर ने उपस्थित ज्ञानार्थियों को पावन संबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर नाकोड़ा ट्रस्ट मंडल द्वारा संचालित मार्गवर्ती गोशाला में भी पधारे। जसोल के बाहरी क्षेत्र में स्थित आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना, अणुव्रत गीत आदि प्रस्तुत किए। पूज्यवर ने उन्हें ज्ञान के साथ संस्कारों को अर्जित करते रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। अनेक श्रद्धालुओं के मार्गवर्ती फार्महाउस आदि भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने।

लगभग आठ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर जसोल के 'पारस भवन' में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पारस भवन सेवा समिति के संरक्षक श्री शंकरलाल ढेलड़िया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) एवं मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि जसोल में पूज्यवर के ऐतिहासिक चतुर्मास की सानंद परिसंपन्नता के संदर्भ में भावोद्गार व्यक्त किए। पारस भवन सेवा समिति के अध्यक्ष श्री मूलचन्द सालेचा ने आभार ज्ञापित किया। श्री कुमारपाल संकलेचा ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संवर मोक्ष का कारण है। यदि जीवन में संवर की साधना नहीं तो मानना चाहिए कि जीवन में साधना का ज्यादा विकास नहीं हुआ। पंचम गुणस्थान से संवर का प्रारंभ होता है। संवर के पांच प्रकार हैं--सम्यक्त्व संवर, व्रत संवर, अप्रमाद संवर, अकषाय संवर और अयोग संवर। संवर की साधना अध्यात्म की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण निधि होती है। एक सम्यक्त्व संवर आ गया तो आत्मा की अनंत काल की यात्रा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल हो जाती है। एक बार भी सम्यक्त्व का स्पर्श जीव के भव-भ्रमण को सीमित कर देता है। सम्यक्त्व की शुद्धि के प्रति हमें जागरूक रहना चाहिए। सम्यक्त्व को परिपुष्ट बनाने अथवा बनाए रखने के लिए कषाय मंदता की साधना आवश्यक होती है। सम्यक्त्व के बिना किए गए तप का अधिक महत्त्व नहीं होता। इसलिए सम्यक्त्व परिपुष्ट रहे, इसके प्रति हमें विशेष जागरूक रहना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'व्रत संवर मनोभावों के खुलेपन को रोकने वाला होता है। अनियंत्रित आशा-लालसा पर लगाम लगाने वाला होता है--व्रत संवर। जितना सावद्य योगों का त्याग होता है, व्रत संवर उतना ही परिपुष्ट हो जाता है। साधु के पूर्ण और श्रावक के आंशिक व्रत-संवर निष्पन्न होता है। साधक को क्रमशः अप्रमाद आदि संवर की दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए। जितना त्याग, संयम विकसित होता है, उतना ही आत्मोत्थान होता जाता है। असंयम अपने लिए असुरक्षा और संयम सुरक्षा है। इन्द्रिय संयम की साधना का अभ्यास अध्यात्म साधना का विकास है। इसलिए जीवन में संयम की चेतना को विकसित बनाना चाहिए।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के मध्य सन् १९८५ में पारस भवन में आचार्य तुलसी द्वारा किए गए मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवास का स्मरण किया। आचार्यप्रवर ने जसोल के कतिपय श्रावक-श्राविकाओं को संबोधन भी प्रदान किए। संबोधन प्राप्तकर्ताओं के नाम इस प्रकार है--

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री देवराज ढेलड़िया	जसोल	४. श्री अचलचन्द बोकड़िया	जसोल
२. श्री मोतीलाल एम. गांधी मेहता	जसोल	५. श्री गौतमचन्द मांडोतर	जसोल
३. श्री मोतीलाल एस. गांधी मेहता	जसोल		

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती अणचीदेवी ढेलड़िया	जसोल	४. श्रीमती मोहिनीदेवी गांधी मेहता	जसोल
२. श्रीमती सुवटीदेवी ढेलड़िया	जसोल	५. श्रीमती बदामीदेवी बोकड़िया	जसोल
३. श्रीमती अणचीदेवी गांधी मेहता	जसोल		

इतिहास दुर्लभ चतुर्मास जसोल : सिद्ध चतुर्मास जसोल

१ दिसम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने आज प्रातः जसोल से प्रस्थान करने से पूर्व जनता के बीच जसोल चतुर्मास के संदर्भ में कहा--'आज हम जसोल से विहार कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद अनिश्चितकाल के लिए जसोल से दूर हो रहे हैं। जसोल चतुर्मास के बारे में चिंतन किया, ध्यान दिया और कुछ औरों से जानकारी की। यह चतुर्मास इतना सफल हुआ है कि मैं इसके लिए दो विशेषणों का प्रयोग कर रहा हूं--

१. सन् २०१२ का जसोल का इतिहास दुर्लभ चतुर्मास।

२. सन् २०१२ का जसोल का सिद्ध चतुर्मास।

पूज्यवर ने कहा--'इन दो विशेषणों की लंबी व्याख्या हो सकती है। इतना तो आज समय नहीं है, इसलिए मैंने तो सूत्र रूप में बता दिया। सूत्र की व्याख्या हमारे संत कर सकते हैं। चतुर्मास में यहां के कार्यकर्ता भी मनोयोग और निष्ठा के साथ जुड़े रहे, धर्म के साथ जुड़े रहे। लोगों के साथ अहिंसापूर्ण और मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया। इस प्रकार इस चतुर्मास की अनेक बातें उल्लेखनीय हैं।'

पूज्य आचार्यवर के मुखारविन्द से कृपापूर्ण विशेषणों को सुनकर जसोलवासी आह्लाद और धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। कार्यकर्ताओं में नया उत्साह और उल्लास भरने वाले गुरु द्वारा प्रदत्त ये विशेषण उनकी सेवाओं का अभूतपूर्व मूल्यांकन था। अपनी प्रसन्नता को शब्दों में अभिव्यक्त करना कार्यकर्ताओं के लिए असंभव था।

जसोल चतुर्मास : यशःपूर्ण इतिहास

- परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने सन् २००४ के सिरियारी चतुर्मास में २००९ के लिए जसोल चतुर्मास की घोषणा की थी। किन्हीं कारणों से वह संभव नहीं हो सका। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी

ने अपने आचार्य पदाभिषेक के ऐतिहासिक अवसर पर अपने गुरु के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के संकल्प के साथ केलवा और जसोल चतुर्मास की घोषणा की। जसोल में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में भी यही कहा था--'मैं अपने गुरु का वचन निभाने जसोल आया हूं।' पूज्यवर की गुरुनिष्ठा हम सबके लिए आदर्श है। संयोगवश पांच मास का चतुर्मास प्रदान कर आचार्यवर ने अपने गुरु का ऋण मानो ब्याज सहित चुका दिया। किन्तु अपने परिश्रम से, अपनी पावन प्रेरणा से, अपनी स्नेहमयी दृष्टि एवं वात्सल्यमयी वृष्टि से जसोलवासियों को चिर ऋणी बना दिया।

- तेरापंथ धर्मसंघ का सिवांची-मालाणी क्षेत्र का जसोल नगर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के पंचमासी चातुर्मासिक प्रवास से विश्व मानचित्र पर उभर कर सामने आया है। पहाड़ की तलहटी में बसे जसोल नगर के वीर जगमालजी ने मुस्लिम शासक अलाउद्दीन खिलजी की विशाल सेना से कड़ा मुकाबला किया था। छपाई-रंगाई के लिए प्रसिद्ध इस क्षेत्र के आसपास नाकोड़ा तीर्थ, ब्रह्मा मंदिर, तिलवाड़ा मल्लिनाथ मंदिर जैसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। जैनों के इस पुराने क्षेत्र में तेरापंथ का प्रवेश द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी के पदार्पण से हुआ। चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य अपनी मुनि अवस्था व आचार्यकाल में यहां पधारे। जयाचार्य के समय जसोल की भूमि में श्रद्धा के कई प्रसंग बने। यहां की प्रथम दीक्षा तृतीयाचार्य ऋषिराय के शासनकाल में मुनि कपूरजी की हुई। मालाणी क्षेत्र के इस नगर में तेरापंथ की आचार्य परंपरा में यह प्रथम चतुर्मास सवाये (पंचमासी) रूप में आचार्यश्री महाश्रमण ने सफलतापूर्वक संपन्न किया।
- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर एवं संतों का नाकोड़ा रोड स्थित तेरापंथ भवन में प्रवास हुआ। इस विशाल भवन के भूमितल व प्रथम तल में बाईस कमरे व एक विशाल हॉल है। कमरे भी बड़े हैं। उनमें भी चार कक्ष तो एक प्रकार से छोटे हॉल जैसे हैं। भवन की लंबाई ५५० फीट व चौड़ाई ८५ फीट है। भवन की भव्यता ने हर किसी का मन मोहा। भवन का विशाल गेट व उसके अन्दर की लॉबी भी रमणीय है। वहां कूलर लगे हुए थे। लॉबी में प्रायः लोग बैठे मिलते। भवन से ही संलग्न विशाल पण्डाल सहज ही सबका ध्यान आकर्षित करता था।
- महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी व अन्य साध्वियों का प्रवास विभिन्न मकानों में हुआ। महाश्रमणीजी का प्रवास ओसवाल भवन (नया) में हुआ। अन्य मकान जिनमें साध्वियों का प्रवास हुआ, वे हैं--श्री गौतमचन्द लूंकड़, देवराज संकलेचा, डूंगरचन्द वडेरा, माणकचन्द संकलेचा, गौतम एम.भंसाली के मकान। समणीवृन्द का प्रवास मुख्यतः पुराने ओसवाल भवन में हुआ। पहले दो माह श्री कालूराम संकलेचा के मकान में प्रवास किया।
- चतुर्मास प्रारंभ के समय संत ५१ व साध्वियां ९२ थीं। पावस प्रवास के समय दो प्रभावी संथारे हुए। दीक्षाएं भी हुईं। चतुर्मास समाप्ति के दिन संतों की संख्या ५७ व साध्वियां की संख्या १०२ थी। आचार्यप्रवर ने इस चतुर्मास में महती कृपाकर सिवांची-मालाणी क्षेत्र के सोलह संतों एवं सताइस साध्वियों को गुरुकुलवास में रहने का अवसर प्रदान किया।
- वीतराग समवसरण में प्रतिदिन के निर्धारित कार्यक्रमों की शृंखला में पश्चिम रात्रि में प्रायः आचार्यवर पधार जाते। चौबीसी संगान, अर्हत् वंदना व अन्य स्वाध्याय के बाद प्रतिक्रमण आदि का क्रम चलता। सूर्योदय से पूर्व आचार्यवर वृहद् मंगलपाठ सुनाते। सैंकड़ों/हजारों की संख्या में दर्शनार्थी व सेवार्थी दत्तचित्त होकर श्रवण करते और फिर पंक्तिबद्ध होकर चरणस्पर्श करते। उसके बाद प्रातःकालीन प्रवचन का कार्यक्रम चलता। मध्याह्न में साध्वी कमलप्रभाजी, साध्वी जिनरेखाजी व साध्वी रतिप्रभाजी ने संवत्सरीपर्यंत वक्तव्य दिए। सायं गुरु वंदना के बाद स्थानीय कन्यामंडल की कन्याओं ने प्रायः प्रतिदिन श्रावक प्रतिक्रमण करवाया। प्रतिक्रमण श्रवण के समय अच्छी उपस्थिति रहती। यह क्रम आगंतुकों और स्थानीय निवासियों के लिए आह्लाददायक रहा।

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के प्रवचन प्रायः आर्हत वाङ्मय पर होते। रविवार को प्रायः निर्धारित विषयों पर विशेष प्रवचन हुए। आचार्यवर के सरल व सारगर्भित प्रवचनों का श्रोताओं पर गहरा प्रभाव जमा। विशुद्ध आध्यात्मिक प्रवचनों में तत्त्वचिंतन, संघीय संस्कार एवं जीवन के रूपान्तरण की प्रक्रिया इस ढंग से परोसी जाती कि वह भीतर तक उतर जाती। समय की उपलब्धता के साथ आचार्यवर गुरुदेव तुलसी के ग्रंथ 'डालिम चरित्र' का सस्वर संगान करते हुए उसमें वर्णित प्रसंगों, परंपरा एवं सिद्धान्तों की मार्मिक प्रस्तुति देते। यह प्रस्तुति राजस्थानी भाषा में होती। अधिवेशनों, शिविरों व अन्य कार्यक्रमों की शृंखला पावस प्रवास में चलती रही। इन सबके बावजूद आचार्यवर का समय प्रबंधन कौशल इतना पावरफुल है कि प्रवचन का समय प्रायः स्थिर रहा तो कार्यक्रम भी अधिकांशतः समयबद्ध चले। सामान्यतः आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का विविध विषयों पर संक्षिप्त तो कभी विस्तृत अभिभाषण होता। प्रारंभ में प्रातः प्रवचन कार्यक्रम में स्थानीय कन्यामंडल ने चौबीसी संगान को प्रभावी प्रस्तुति दी। आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व वर्षों से चल रहे क्रम के अनुसार मुनि दिनेशकुमारजी का उपदेश होता। चतुर्मास में कुछ समय के लिए शासनश्री साध्वी चांदकुमारीजी, शासनश्री साध्वी यशोधराजी, साध्वी कमलप्रभाजी एवं समणी निर्मलप्रज्ञाजी के उपदेशात्मक वक्तव्य हुए। प्रातःकालीन कार्यक्रमों का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने कुशलता से किया। प्रातःकालीन प्रवचन में उपस्थिति उल्लेखनीय रहती। प्रायः प्रतिदिन स्थानीय लोगों के अतिरिक्त बालोतरा, पचपदरा, असाडा, टापरा आदि क्षेत्रों से लोग सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से प्रवचन सुनने आते रहे। रविवार के दिन पाली, जोधपुर, बाड़मेर एवं अन्य अनेक क्षेत्रों से लोग सेवा में पहुंचते रहे।
- रात्रि में चतुर्मास के दौरान लगभग दो माह तक यति केशराजजी द्वारा विरचित 'राम जसोरसायन' (जैन रामायण) का वाचन हुआ। परम श्रद्धेय आचार्यवर गीत संगान के साथ विस्तार से विवेचन करते तो एक समां-सा बंध जाता। रामायण संगान में आचार्यवर के साथ मुख्यतः मुनि दिनेशकुमारजी सहयोग करते। आचार्यवर का रामायण प्रवचन प्रारंभ में तीन दिन के बाद प्रतिदिन लगभग पैंतालीस मिनट होता। उससे पूर्व मुनि रजनीशकुमारजी का 'श्रावक संबोध' पर वक्तव्य होता। रामायण वाचन की समाप्ति के बाद भी उनका यह क्रम प्रायः चतुर्मासपर्यंत चलता रहा। अन्य दिनों में मुनि विजयकुमारजी, मुनि अजितकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी के भी वक्तव्य होते रहे। रात्रि में समय-समय पर जिन संतों के अपेक्षानुसार गीत होते रहे, वे थे--मुनि नीरजकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी। चतुर्मास प्रारंभ के साथ जैन विद्या कार्यशाला चली। पर्युषण में आचार्य जीवनवृत्त पर वक्तव्य हुए। रात्रि कार्यक्रमों का संयोजन मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने किया।
- आचार्य तुलसी की जन्मशताब्दी के संदर्भ में मुनि दीक्षाओं के पुनीत लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में भी इस चतुर्मास में उल्लेखनीय प्रगति हुई। ५ नवम्बर को समायोजित वृहद् दीक्षा समारोह में होने वाली दीक्षाओं में से १७ मुनि दीक्षाओं सहित अब तक जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में संकल्पित १०० मुनि दीक्षाओं में से अब तक ३२ दीक्षाएं संपन्न हो गईं। चतुर्मास के दौरान पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट होने वाली उपासिका बहनों की संख्या २८ है, जो एक कीर्तिमान है। पूज्यवर ने अनुग्रह करते हुए इन उपासिकाओं को चतुर्मास के दौरान जसोल में ही रहकर उपासना करने की अनुमति प्रदान की। इस पंचमासी प्रवास में उन्हें आचार्यवर से विशेष प्रेरणा-पाथेय प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी आदि के पास भी उनके प्रशिक्षण का क्रम चला।
- आचार्यवर के महान अनुग्रह से चतुर्मास में साध्वियों के दो प्रभावक संथारे हुए। साध्वी वैराग्यश्रीजी (टमकोर) का सातदिवीय तिविहार संलेखना सहित ३६ दिनों का तिविहार अनशन हुआ। साध्वी भीखांजी (लाडनूं) का तीन दिवसीय चौविहार संलेखना सहित ग्यारह दिनों का चौविहार अनशन अद्भुत आत्मबल का परिचायक था। पूज्यवर ने अनशन के दौरान साध्वीद्वय को प्रतिदिन दर्शन देकर कृतार्थ किया।

- २९ जून को चातुर्मासिक प्रवेश पर आयोजित अभिनंदन समारोह में विशाल जनमेदिनी के बीच आचार्यवर ने 'नशामुक्त जसोल' का आह्वान किया था। इस अभियान के अंतर्गत मुनि जिनेशकुमारजी के उपपात में कार्य योजना बनी। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर के आठ स्थानों पर पूज्यप्रवर के विशेष प्रवचन हुए, जिनमें नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। बड़ी संख्या में लोग नशामुक्त बने। एक अच्छे वातावरण का निर्माण हुआ।
- समाज सुधार के परिप्रेक्ष्य में आचार्यप्रवर ने तपस्या और मृत्यु के प्रसंग पर भोज व अन्य आडंबरों से मुक्त रहते हुए सादगी का परिचय देने का आह्वान किया। आचार्यवर के इस आह्वान का न केवल सिवांची-मालाणी क्षेत्र में अपितु पूरे देश में व्यापक सकारात्मक असर हुआ। हजारों लोगों ने इस संदर्भ में संकल्प स्वीकार किए।
- महातपस्वी आचार्यवर ने इस चतुर्मास में स्थानीय सभी तेरापंथी घरों में पधार कर उन्हें कृतार्थ किया। आश्विन शुक्ला एकादशी से प्रारंभ हुए इस क्रम में पूज्यवर का जिस गली में पदार्पण होता, वहां अलौकिक वातावरण देखने को मिलता। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर श्रद्धालुओं की प्रसन्नता का पार नहीं रहता। प्रथम और द्वितीय तल पर रहने वाले श्रद्धालुओं के घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से वंचित नहीं रहे। अपने श्रम-श्वेद को बहाकर आचार्यवर ने न केवल तेरापंथी श्रावकों के दिल की प्यास बुझाई, अपितु बड़ी संख्या में अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के घरों को भी अपनी चरणरज से पावन किया। पूज्यवर का पावन पदार्पण लोगों में अनिर्वचनीय उत्साह को उत्पन्न करने वाला होता। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने भी सभी घरों की स्पर्शना की। इस अवस्था में उनके द्वारा किया जाने वाला श्रम सबके लिए प्रेरणास्पद है।
- पूज्यवर प्रातः जिन घरों में पधारते, उन श्रद्धालु परिवारों को मध्याह्न में उपासना का भी अवसर प्राप्त होता। इस सेवा के दौरान परिचय प्राप्ति के साथ श्रद्धालुओं को माला, सामायिक, नशामुक्ति आदि की प्रेरणा भी प्रदान की जाती। इस क्रम में लोगों ने विविध संकल्पों को स्वीकार किया। इस प्रकार आचार्यवर का यह चतुर्मास जसोलवासियों की सार-संभाल की दृष्टि से भी उल्लेखनीय रहा। आचार्यवर के इस कार्य में मुनि जितेन्द्रकुमारजी का भी सहयोग रहा।
- इस चतुर्मास की एक महनीय उपलब्धि बनी--दिगम्बर जैन समाज की महत्त्वपूर्ण संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी द्वारा श्वेताम्बर आचार्यश्री महाश्रमण को 'श्रमण संस्कृति उद्गाता' के रूप में विशेष सम्मान देना। यह संपूर्ण धर्मसंघ के लिए गौरव का प्रसंग बना।
- चतुर्मास प्रारंभ श्रावण कृष्णा एकम से प्रातः प्रवचन से पूर्व ज्ञान गोष्ठी का आयोजन होता था, जिसमें आचार्यवर की पावन सन्निधि में मंत्री मुनिश्री एवं मुख्यनियोजिकाजी सहित बड़ी संख्या में साधु-साध्वियां भाग लेते। प्रारंभ में निर्णय विंशिका पर विवेचन चला। फिर जयाचार्यकृत 'संदेहविषौषधि' का भी वाचन चला। इन सबका विश्लेषण मुख्यतः मंत्री मुनिश्री करते। जिज्ञासा-समाधान का क्रम भी बहुत सुन्दर चला। चतुर्मास के आखिरी दिनों में 'परंपरा की जोड़' का भी वाचन चला, जिसमें प्रायः सभी साधुओं की अनिवार्यतया उपस्थिति रहती थी। ज्ञान गोष्ठी के अलावा साधु-साध्वियों की व्यवस्थित सामूहिक गोष्ठियां चलीं। कल्याण परिषद गोष्ठी, गुरुदेव तुलसी जन्मशताब्दी समारोह के संदर्भ में गठित व्यक्तित्व निर्माण प्रकल्प परिषद तथा समीक्षा परिषद की मीटिंगें नियत तिथि व समय पर होती रहीं। अपेक्षानुसार अन्य मीटिंगें भी समय-समय पर हुईं।
- आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह की पूर्व तैयारी के संदर्भ में अनेक उपक्रमों का प्रवर्तन हुआ। अनेक मीटिंगों में इस परिप्रेक्ष्य में निर्णय लिए गए। चतुर्मास में समारोह से संबंधित लोगो, ब्रोस्चर, परिचय पुस्तिका, परिपत्र, अणुव्रत संकल्प पत्र आदि विधिवत् उद्घाटित हुए। तुलसी वाङ्मय का कार्य भी उत्कर्ष पर पहुंचा।

- विकास महोत्सव के अवसर पर पूज्यप्रवर ने तेरापंथ विकास परिषद् के नए स्वरूप की उद्घोषणा की तथा सात वरिष्ठ श्रावकों को इसका सदस्य मनोनीत किया। तेरापंथ अमृत संसद को ३१ दिसम्बर २०१३ तक तथा उसके बाद भी नए निर्णय तक अप्रभावी रखने की भी घोषणा की। इसी के साथ विभिन्न संस्थाओं तथा अंतरंग व बहिरंग प्रवृत्तियों के प्रभारी व सहप्रभारी साधु-साध्वियों को ससम्मान मुक्त किया।
- जसोल चतुर्मास में तपस्या उल्लेखनीय हुई। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार बीस मासखमण हुए। साधु-साध्वियों में मुनि पृथ्वीराजजी के मासखमण सहित अनेक तपस्याएं हुईं। साध्वियों से प्राप्त विवरण के अनुसार लोगों में वर्षीतप के अतिरिक्त दो माह एकान्तर ७८, एक माह एकान्तर ३७ हुए। उपवास की बारी इक्कीस चली। तपस्या की प्रेरणा व उसका विवरण तैयार करने में मुनि जिनेशकुमारजी का निष्ठापूर्ण श्रम रहा। मुनि पृथ्वीराजजी का भी सहयोग रहा। उनसे प्राप्त विवरण के अनुसार तपस्याएं इस प्रकार हुईं-- आठ ३१६, नौ ६०, दस २६, ग्यारह ६, बारह ३, तेरह २, चौदह २, पन्द्रह ६, सोलह १, सत्रह १, चालीस १, इक्यावन १, बहत्तर १, एक सौ आठ १ सिद्धि तप ३, पंचरंगी ६, सतरंगी १, नवरंगी १, आयंबिल ६००। तेला तप अभियान के अन्तर्गत १००८ तेले संपन्न हुए।
- चतुर्मास प्रारंभ के साथ कार्य के सम्यक् संपादन हेतु आचार्यवर ने कई साधु-साध्वियों को नियुक्त किया। चतुर्मास में भाइयों को श्रावक प्रतिक्रमण सिखाने में मुनि परमानंदजी, मुनि यशवंतकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी तथा बहनों को सिखाने में साध्वी नीतिश्रीजी, साध्वी जिनरेखाजी, ललितकलाजी, अमृतप्रभाजी की नियुक्ति की। भाइयों को तत्त्वज्ञान सिखाने में मुनि मदनकुमारजी व बहनों का दायित्व साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी वंदनाश्रीजी व साध्वी उदितयशाजी को सौंपा। भाइयों को तपस्या की प्रेरणा व उसका विवरण रखने का दायित्व मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) तथा बहनों का साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी धवलप्रभाजी, साध्वी तरुणप्रभाजी को दिया। प्रेक्षाध्यान कक्षा भाइयों के लिए मुनि जयकुमारजी व बहनों के लिए साध्वी शुभ्रयशाजी व साध्वी आरोग्यश्रीजी को दिया गया। साध्वियों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार निम्नोक्त संख्या में मुख्यतः बहनों ने कंठस्थ किए--प्रतिक्रमण १०२, पचीस बोल २३, भक्तामर ३२, तत्त्वचर्चा ६, श्रावक संबोध २०, आचारबोध ७, संस्कारबोध ४, व्यवहारबोध ५, विभिन्न थोकड़े ६६, तेरापंथ प्रबोध २, विभिन्न संस्कृत ग्रंथ २३ । दो सौ लोगों ने बारहव्रत स्वीकार किए। पंचसूत्री अणुव्रत फार्म ३३५ भरे गए। इसमें कई साध्वियों का योग रहा। जसोल और उससे पहले यात्रा में लगभग ६३ भाई-बहनों ने गुरु धारणा की। साध्वी सुषमाकुमारीजी ने साध्वी दर्शनप्रभाजी व साध्वी गौरवप्रभाजी के साथ गांव के आठ मोहल्लों के लगभग ७० घरों में भ्रमण कर उन्हें धार्मिक प्रेरणा प्रदान की।
- तेरापंथी महासभा के एक उपक्रम ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत इस वर्ष ज्ञानशाला प्राध्यापक प्रशिक्षण प्रवेश शिविर आयोजित हुए, जिसमें एक नए अध्याय का प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला की कार्यशाला भी उल्लेखनीय रही। कई क्षेत्रों की ज्ञानशालाओं ने गुरुदर्शन कर अपनी प्रस्तुति दी।
- चतुर्मास में छोटे-बड़े कई संघों का आवागमन जारी रहा। मुम्बई से स्पेशल ट्रेन 'गुरुदेव मुम्बई पधारो' की प्रार्थना के साथ जसोल पहुंची। इसी तरह सूरत व अहमदाबाद के लोग बसों के माध्यम से बड़ी संख्या में पहुंचे। बेंगलुरु, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद, इन्दोर, नेपाल, उत्तर प्रदेश, विहार व अन्य कई क्षेत्रों से लोग संघबद्ध जसोल पहुंचे।
- चतुर्मास स्थल से नाकोड़ा तीर्थ मात्र सात किमी. दूर है। वहां संघबद्ध व व्यक्तिगत रूप से आने वाले मूर्तिपूजक व स्थानकवासी समुदाय के लोग प्रायः आचार्यवर के दर्शन एवं सेवा हेतु पहुंच जाते। वे सभी तेरापंथ की गौरवमयी परंपरा, रीतिरिवाज व व्यवस्था को देखकर अभिभूत थे। यदि इन दर्शनार्थियों के आंकड़ों को व्यवस्थित रखा जाता तो इनकी संख्या हजारों में होती।

- पूज्यवर के इस चतुर्मास में दीर्घकालीन सेवा करने वालों की सूची भी काफी लंबी है। दो माह और उससे अधिक सेवा करने वालों ने आचार्यवर को गोचरी करवा कर धन्यता की अनुभूति की। सिवांची-मालाणी के अनेक श्रद्धालुओं ने प्रथम बार कुटीरों में रहकर लंबी उपासना का लाभ लिया।
- चतुर्मास काल में अहमदाबाद, सूरत तथा दक्षिण के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में प्रवास करने वाले जसोल के अनेक श्रद्धालु भी इस बार अपने घरों को खोलकर पांच माह अथवा अधिकांश समय तक जसोल में रहे और दुर्लभ अवसर का लाभ उठाकर आह्लाद का अनुभव किया।
- पूज्यवर के इस चतुर्मास में व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा का निष्ठापूर्ण श्रम मुखरित हुआ। श्री सालेचा सुबह से रात्रि तक एक सामान्य कार्यकर्ता की भांति व्यवस्था में लगे रहते। चतुर्मास से पूर्व और चतुर्मास के दौरान लगभग डेढ़ वर्ष तक वे अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान में व्यावसायिक दृष्टि से गए ही नहीं। महामंत्री श्री शांतिलाल भंसाली ने भी निष्ठा के साथ व्यवस्थाओं में अपना श्रम और समय नियोजित किया। उनके साथ अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़, कोर्डिनेटर डॉ. केवलचन्द सालेचा, स्वागताध्यक्ष श्री गणपतलाल कोठारी, उपसंयोजक श्री धनराज तातेड़, श्री ताराचन्द कोठारी, श्री भीकमचन्द मेहता, श्री प्रकाशचन्द नाहटा, श्री माणकचन्द तलेसरा, श्री गौतमचन्द डोसी चौपड़ा, श्री भंवरलाल कुंकुचौपड़ा, श्री दीपचन्द ढेलड़िया, श्री पृथ्वीराज संकलेचा, श्री शान्तिलाल भंसाली, मंत्री श्री दीपचन्द बोकड़िया, श्री महेन्द्र तातेड़, श्री माणकचन्द संकलेचा, कोषाध्यक्ष श्री मोतीलाल जीरावला, श्री मदनलाल कोठारी, श्री ओमप्रकाश बोहरा, श्री दिलीपकुमार गांधीमेहता, उपसमितियों के संयोजक श्री गणपत भंसाली, श्री चन्द्रशेखर सालेचा, श्री रमेशचन्द्र बोहरा, हनुमान भंसाली, महावीर ढेलड़िया, सुरेश डोसी, नरेन्द्र एम.मांडोतर, राजेन्द्र छाजेड़, गौतमचन्द बोकड़िया, ओमप्रकाश सुराणा, शान्तिलाल गांधी मेहता, महेन्द्र तातेड़, सुरेन्द्र सालेचा, भूपत कोठारी, प्रकाश गांधीमेहता, पारसमल डोसी, शांतिलाल बोकड़िया, अशोक बोकड़िया, राजेन्द्र भंसाली, दिनेश डोसीचोपड़ा, चन्द्रप्रकाश तातेड़, ओमप्रकाश लूंकड़, विजय वडेरा, राजेन्द्र श्रीश्रीमाल, अशोक सालेचा, पीयूष सालेचा, तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली, मंत्री श्री संपतराज चौपड़ा, तेयुप अध्यक्ष रमेश भंसाली, मंत्री जितेन्द्र सालेचा, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती फेनादेवी भंसाली, मंत्री नीतू सालेचा, किशोरमंडल संयोजक मुदित ढेलड़िया, उपसंयोजक लालचन्द संकलेचा, कन्यामंडल संयोजिका नेहा डोसी, सहसंयोजिका रीना चौपड़ा आदि कार्यकर्ताओं ने पूरी टीम के साथ व्यवस्था कार्य का संचालन किया। कुछ कार्यकर्ताओं ने तो चतुर्मास पूर्व ही चतुर्मास स्थल को ही जैसे अपना घर मान लिया। दिन-रात किए गए उनके श्रम का परिणाम 'इतिहास दुर्लभ चतुर्मास' और 'सिद्ध चतुर्मास' जैसे महनीय विशेषणों के रूप में आया।
- लगभग अड़तालीस हजार वर्गफीट भू-भाग में निर्मित पण्डाल 'वीतराग समवसरण' में प्रायः कार्यक्रम चले। अधिवेशनों व सेमिनारों के लिए निर्मित आठ हजार वर्गफीट का कान्फ्रेंस हॉल बहुत उपयोगी रहा। वैसे तेरापंथ भवन के हॉल में भी अनेक गोष्ठियां, सेमिनार, अधिवेशन, शिविर, कार्यशालाएं आयोजित हुईं। इस चतुर्मास में पहली बार माइक व्यवस्था का समग्र दायित्व तेरापंथी महासभा ने वहन किया। प्रायः पूरे गांव में साउण्ड सिस्टम लगा हुआ था।
- चतुर्मास को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण कड़ी है सुनियोजित आवास व्यवस्था। कार्यकर्ताओं ने इसे गंभीरता से लिया और छोटे से कस्बे में चातुर्मास स्थल के निकट इतनी विशाल और सुन्दर व्यवस्था करके आगंतुक सेवार्थियों का दिल जीत लिया। अरिहंत नगर, सिद्धनगर, आचार्य नगर, उपाध्याय नगर, श्रमण नगर, ज्ञान विहार, आदि नामों से अभिहित कुटीरों में ३६ टू रूम किचन तथा १८ वन रूम सहित ७५ एसी कुटीर, ३५ टू रूम किचन नॉन एसी कुटीर तथा ३५६ सिंगल पक्की कुटीर, ५६ कूलर युक्त प्लाईवुड कुटीर सहित २२२ प्लाईवुड सिंगल कुटीर, २२ प्लाईवुड हॉल, १५ डोरमेट्री रूम--इस प्रकार लगभग ७५० कुटीरों का निर्माण किया गया। कार्यकर्ताओं का मृदु और मधुर व्यवहार तथा सुचारु आवास व्यवस्था दूर-दूर से समागत सेवार्थियों की थकान को दूर कर देते थे। इस व्यवस्था

के अंतर्गत पारस भवन, नाकोडा के भवन, रॉयल हेरिटेज, राजेन्द्र धाम, हिमाड़ा, कोठारी काम्प्लेक्स, अरिहंत पैलेस, महावीर होटल आदि अनेक स्थानों का उपयोग दर्शनार्थियों और बड़े संघों के लिए किया गया। इस व्यवस्था में संयोजक श्री गौतमचन्द लूंकड़ और उनकी टीम का सक्रिय योगदान रहा।

- चातुर्मास व्यवस्था समिति द्वारा बत्तीस हजार वर्गफीट में फैली भोजनशाला में यात्रियों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। इस व्यवस्था के माध्यम से 'अतिथि देवो भव' की उक्ति को चरितार्थ कर जसोलवासियों ने आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के हृदय में विशेष स्थान बनाया। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस व्यवस्था के अंतर्गत श्रद्धालुओं एवं कर्मचारियों के लिए लगभग ४,२२००० कूपन उपयोग में आए। इस व्यवस्था के संयोजक श्री मदन सालेचा एवं उनकी टीम का निष्ठापूर्ण श्रम रहा। चतुर्मास व्यवस्थाओं की सफलता में यह व्यवस्था महत्त्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हुई।
- चतुर्मास स्थल के समीप जैनम ग्रुप जसोल एवं तेयुप जसोल द्वारा जैनम केंटीन की व्यवस्था की गई। मात्र तीन रूपये में कचौडी और दो रुपये में चाय-कॉफी की व्यवस्था को आगंतुकों ने मुक्त कंठ से सराहा।
- चातुर्मास व्यवस्था समिति द्वारा सुचारु पेय जल व्यवस्था हेतु आर. ओ. सिस्टम लगाया गया। चतुर्मास स्थल के परिपार्श्व में स्थान-स्थान पर उपलब्ध शीतल और मीठे पेयजल से आगंतुकों को सुविधा प्राप्त हुई। कुटीरों में सेवा करने वाले सेवार्थियों के मात्र दस रुपये में केन के माध्यम से जल सप्लाई की गई। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यों हेतु चौबीस घंटे पानी की व्यवस्था उपलब्ध रही। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रतिदिन लगभग दो लाख लीटर पानी उपयोग में आया।
- चतुर्मास के दौरान चिकित्सा व्यवस्था भी काफी उदात्त रही। इस कार्य में डा.विष्णु अग्रवाल की विशेष सेवाएं रहीं। इसके अतिरिक्त डॉ. मदन खारवाल, श्री राधामोहन वैद्य एवं श्री रामकिशोर शर्मा की सेवाएं भी प्राप्त हुईं। प्राथमिक उपचार हेतु आवास कार्यालय में चौबीस घंटे व्यवस्था रही। ममता मेडिकल, जसोल के श्री ओमप्रकाश लूंकड़ और मयंक मेडिकल बालोतरा के श्री देवीलाल ओस्तवाल ने अपेक्षानुसार प्रासुक तथा एषणीय औषधि बहराने का लाभ उठाया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा संचालित एटीएम की व्यवस्था भी उपयोगी रही।
- चतुर्मास की विभिन्न व्यवस्थाओं हेतु जसराज बुरड़, श्री भीकमचन्द मेहता, पुखराज मदनलाल सालेचा, रमेश बोहरा, पुखराज बोहरा, दीपचन्द ढेलड़िया, देवराज सोनी, मांगीलाल संकलेचा, अमोलकचन्द तातेड़, श्यामसुन्दर खंडेलवाल, जगदीश बोकड़िया, जसराज तातेड़, जूठमल बोकड़िया, देवराज बुरड़, सुमेरमल सिंघवी, पृथ्वीराज पी.संकलेचा, गंगासिंह ठाकुर, मीठालाल मेहता, अमीचन्द कंकुचोपड़ा, मूलचन्द सालेचा, गौतमचन्द एम.भंसाली, ओमप्रकाश सुराणा, दलीचन्द तलेसरा, बाबूलाल सालेचा, डूंगरचन्द वडेरा, बाबूलाल डोसी की भूमि का उपयोग किया गया।
- चतुर्मास के संदर्भ में ग्राम पंचायत का विभिन्न व्यवस्थाओं में सहयोग रहा। विभिन्न गलियों की लगभग १५०० मीटर सड़क का नवनिर्माण ग्राम का कायाकल्प करने वाला रहा। राजस्थान सरकार द्वारा अहिंसा सर्कल से नाकोड़ा तक की सड़क का फोरलाइन हाइवे के रूप में निर्माण और उस पर नगरपालिका बालोतरा द्वारा चतुर्मास स्थल तक विद्युत की व्यवस्था यात्रियों के लिए सुविधाजनक रही। सफाई व्यवस्था में भी ग्राम पंचायत का अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ।

तपस्याएं

- जसोल में परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में मुनि शुभंकरजी ने नौ की तपस्या की है।
- श्यामनगर (जयपुर) में साध्वी अणिमाश्रीजी एवं साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की सन्निधि में श्रीमती नीतू छाजेड़, श्रीमती गीतिका सेठिया एवं श्री विकास कोठारी ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- भीलवाड़ा में शासनश्री साध्वी नगीनाजी की सन्निधि में श्रीमती उषा बोहरा ने मासखमण तप किया है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 8-12-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- हासन (कर्नाटक) में साध्वी कीर्तिलताजी की सन्निधि में श्रीमती रेखा धोका ने मासखमण तप किया है।
- मानसा (पंजाब) में मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में श्रीमती वीरमती जैन ने ३१ की तपस्या की है।
- अहमदगढ़ (पंजाब) में साध्वी सुदर्शनाजी की सन्निधि में सुश्री तान्या जैन ने मासखमण तप एवं सुश्री प्रीति जैन ने ३२ की तपस्या की है।
- साहूकारपेठ (चेन्नई) में साध्वी संगीतश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती आर. टीना संचेती, श्रीमती गायत्री बैदमूथा (माहेश्वरी),श्रीमती ललिताबाई दूगड़, श्रीमती किरणदेवी कोठारी, श्रीमती विमलादेवी मांडोत--इन सभी ने ३१ दिन की तपस्याएं संपन्न की हैं।
- बेंगलुरु में साध्वी पीयूषप्रभाजी की सन्निधि में श्रीमती राजकंवर बरलोटा मूथा ने ४१ दिन की तपस्या संपन्न की है।
- जालना (महा.) में मुनि धर्मेशकुमारजी के सान्निध्य में श्रीमती सीमा मूथा ने मासखमण तप किया है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्रीमती मनोहरीदेवी छाजेड़ की २५वीं पुण्यतिथि पर श्री किस्तूरचन्दजी छाजेड़ परिवार, आडसर (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

५१००/- स्व. श्री भंवरलाल सुतलिया (सुपुत्र-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. प्रेमराजजी सुतलिया, ब्यावर-कोयम्बटूर) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचनदेवी, सुपुत्र सुरेशचन्द, प्रकाशचन्द, सुपौत्र अनुज, अभिषेक, अनमोल सुतलिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. सोहनलाल देवीलालजी मेहता (सायरा-सूरत) की प्रथम पुण्यतिथि (१० दिसम्बर) पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती खमाणीबाई, सुपुत्र मीठालाल विनोदकुमार, पुत्रवधू लीलाबेन, सुखिया एवं वर्षा, सुपौत्र व पौत्रवधू निशान्त, रेखा, वरुण, सुपौत्री धारा, पूर्वी, आकाशी, प्रपौत्र कृशिव, प्रपौत्री जुएना मेहता, द्वारा-विविध फैशन्स, सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सुशीलादेवी बैद (धर्मपत्नी-श्री केसरीचन्द बैद, पुत्रवधू श्री तोलाराम बैद, बीकानेर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र मोहित बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री कन्हैयालालजी दुधोड़िया (छापर-मुम्बई) की ६वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इचरजदेवी, सुपुत्र लाभचन्द, खड़क, अभय दुधोड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती रेणु (प्रपौत्रवधू-स्व. श्री कानमलजी सेठिया, धर्मपत्नी-अजय सेठिया, छोटीखाटू-कानपुर) के नौ की तपस्या के उपलक्ष्य में टीकमचन्द-विमला, अजय, अमित-तनु, प्रखर सेठिया परिवार, कानपुर (उ. प्र.) द्वारा प्रदत्त।

दीक्षा आदेश

२ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने रात्रिकालीन कार्यक्रम में अत्यन्त कृपा कर असाढ़ा निवासी मुमुक्षु जवेरीलाल जीरावला को २३ जनवरी २०१३ को असाढ़ा में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,
पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**